National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(56): 237-239
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

फरीदा उक्कली
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय,विजयपुर

मार्गदर्शिका
प्रो.श्रीमती राजू. बागलकोट
अध्यक्ष. एवं. डीन , हिन्दी विभाग, ,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय,विजयपुर

Correspondence:
फरीदा उक्कली
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय,विजयपुर

अस्मिता की तलाश में नारी: झूला नट उपन्यास के संदर्भ में

फरीदा उक्कली, प्रो.श्रीमती राजू. बागलकोट

शोध सार: महिला कथाकार मैत्रेयी पुष्पा एक प्रसिद्ध लेखिका है। उन्होंने नारी के समस्याओं को लेकर अनेक उपन्यास लिखे है। जिसमें झूला नट उपन्यास भी एक है। इस उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा नारी की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व पारवारिक समस्याओं को एक नए रूप में प्रस्तुत किया है। गाँव की साधारण औरत शीलो न शिक्षा प्राप्त की है न सुन्दर सुगुढ है। पर वे जीवन जीने की शैली में बहुत निपुण है। इस समाज में अकेली अपने सारे समस्याओं का सामना करती है। पुरे समाज का विरोध कर वे अपने अधिकारों को प्राप्त करती है। इस पुरुष प्रधान समाज में वे अपनी सत्ता को स्थापित करने का प्रयास किया है। इस तरह मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों नारी को एक शक्ति और प्रेरणा प्रदान करने में सक्षमता को हासिल किए है।

कुंजी शब्द: सुगड़, प्रधान, प्रेरणा, स्थापित

भूमिका: मैत्रेयी पुष्पा अपने मातृभूमि बुंदेलखंड में अपना बहुत समय बिताया है। वँहा की प्रत्येक स्थिति, संस्कृति, सामाजिक रूढ़ियों को बहुत करीब से देखा-परखा और अनुभव किया है। उनके अधिकतर उपन्यास बुंदेलखंड की माटी से जुड़े है। उसमें झूला नट उपन्यास एक है, जिसमें बुंदेलखंड की उपेक्षित ग्रामीण जीवन को वे समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। इस उपन्यास की नायिका शीलो है। जिसका चेहरा तक पति देखना नहीं चाहता। पर वे इस घटना से आगे निकलकर अपने जीवन को एक अलग ही रूप देती है।

हिंदी उपन्यास परंपरा में स्त्री जीवन की समस्याएँ, संवेदनाएँ और संघर्ष सदैव से महत्वपूर्ण विमर्श का विषय रहे हैं। समाज की संरचनात्मक विसंगतियों, पितृसत्तात्मक मूल्यों और लैंगिक असमानताओं के बीच स्त्री जिस प्रकार अपने अस्तित्व, अधिकारों और पहचान के लिए संघर्ष करती है, वह आधुनिक साहित्य में विशेष रूप से उभरकर सामने आया है। हिंदी कथा-साहित्य में कई लेखकों ने स्त्री के विविध रूपों और संघर्षों को अभिव्यक्त किया है, जिनमें मैरी पुष्पा का स्थान अत्यंत उल्लेखनीय है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास स्त्री के दैनंदिन जीवन, उसके मनोवैज्ञानिक द्वंद्व, पारिवारिक दायित्वों, सामाजिक बंधनों तथा आर्थिक-सांस्कृतिक दबावों को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री मात्र भावनाओं की प्रतीक नहीं, बल्कि संघर्षशील, चेतनशील और आत्मनिर्णय की आकांक्षा रखने वाली सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरती है। वे समाज में व्याप्त दंश, शोषण, उपेक्षा तथा स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताओं को यथार्थवादी दृष्टि से चित्रित करती हैं।

वर्तमान भारतीय समाज में स्त्री-जीवन अनेक स्तरों पर संघर्षरत है— परिवार और समाज की रूढ़ियाँ, आर्थिक निर्भरता और अवसरों का अभाव शिक्षा, स्वतंत्रता और अपने निर्णयों पर नियंत्रण की कमीसामाजिक मान-अपमान और नैतिक दबावलैंगिक भेदभाव और पितृसत्तात्मक मूल्य ,मैत्रेयी पुष्पा इन सभी पहलुओं को अपने उपन्यासों में बड़े प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करती हैं। उनके पात्र जीवन के

यथार्थ से टकराते हैं, अपने भीतर और बाहर की चुनौतियों से जूझते हैं और अपने अस्तित्व को सार्थक करने का प्रयास करते हैं। यही संघर्ष उनके साहित्य का मुख्य स्वर बन जाता है।

इस शोध का उद्देश्य मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में प्रस्तुत स्त्री-जीवन के इन विविध सामाजिक संघर्षों का विश्लेषण करते हुए यह समझना है कि उनके साहित्य में स्त्री अपनी अस्मिता, अधिकारों और आत्मनिर्भरता की खोज किस प्रकार करती है। साथ ही, यह अध्ययन इस बात की भी पड़ताल करेगा कि मैत्रेयी पुष्पा किस सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री-जीवन को व्याख्यायित करती हैं और उनके उपन्यास वर्तमान समाज के स्त्री-विमर्श को किस प्रकार समृद्ध करते हैं।

विश्लेषण: शीलो एक साधारण स्त्री होते हुए भी वे अपने आपको असाधारण साबित करती है। पति उसकी छाया तक को नहीं देखना चाहता और उसे त्यागकर दूसरा विवाह कर लेता है। पारिवारिक, सामाजिक,अपमान, तिरस्कार, मानसिक हिंसा, पीड़ा, अकेलापन, उदासीनता, इन से जूझती रही। पर उसने जीवन का अंत करने की न सोचकर अपने जीवन को एक नए मोड़ पर लेकर गयी। उसके हाथ की छटी उँगली से हताश होने की बजाए उससे प्रेरणा लेती है। उसने अपने छटी उँगली को शारीरिक दोष न मानाकर एक वरदान मानती है। उसीसे अपना भाग्य लिखने का तय करती है।

मैत्रेयी पुष्पा असहाय नारी को सहारे की लाठी के रूप में अपना साहित्यिक सहारा दिया है। शीलो के माध्यम से वे नारी शक्ति को जगाने का प्रयास किया है। न जाने कितने ही स्थितियों से उभरकर उनके उपन्यास के पात्र संभलते है, सहारा खोज लेते है। उनके पात्र जीवंत दर्शन का प्रतीक है, जो नारी के जीवन में स्थित है। यही कहानी शीलो की शक्ति की संयमित की कहानी है। दूसरी और बालकिशन की सरलता व् मानवीयता, मातृ प्रेम की भी कहानी है। यह कहानी नायक-नायिका प्रधान कहानी है। इस कहानी में पुत्र मोह, नारी शोषण, स्त्री पीड़ा, स्त्री दैहिक शोषण, दहेज़ समस्या, आर्थिक व सामाजिक समस्याओं से का चित्रण हुआ है। आदिकाल से ही, स्त्री परम्परा के नाम पर शोषित-पीड़ित होते आई है। इस झूला नट उपन्यास के माध्यम से लेखिका नारी के इसी शोषित रूप को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। शीलो का विवाह जबरस्ती से सुमेर से किया जाता है। सुमेर एक पल भी शीलो के साथ नहीं रहता वह नौकरी के बहाने शीलो को छोड़कर शहर चला जाता है। वहाँ जाकर किसी अन्य स्त्री से विवाह कर लेता है। बहुत समय गुजरने के बाद कानून की डर से, संपत्ति के लिए शीलो की सास अपने दूसरे बेटे बालकिशन को शीलो को सौंप देती है। इस तरह स्त्री को एक वस्तु मानकर हर कोई उसके भावनाओं के साथ खिलवाड़ करता है। शीलों बालकिशन से कहती है- "लला बालकिशन, जनि की जिंदगी...और फिर अपने आदमी की आँखों से उतरी औरत ! हे मेरे संकर महादेव, दुस्मन की गति न करना ऐसी मैं तो तुम्हारे भइया की लातों की फूल-पान समझकर माथे से लगाने को तैयार हूँ, लेकिन इस घर में दर तो पाऊँ।"[1] शीलों और बालकिशन बिना शादी के, शादीशुदा जीवनव्यतीत करने लगते है। एक दिन अचानक सुमेर घर आकर शीलों के साथ बड़े प्यार और मधुरता से रहने लगता है, पर शिलों समझ जाती है उसके इस मधुरता के पीछे छुपे मनसूबे को। फिर भी वह चुप रहकर पत्नी धर्म को निभाने लगती है। अचानक एक दिन मौका देखकर सुमेर शीलों से कहता है – "तुमसे सलाह करना चाहता हूँ, क्योंकी तुम ही इस घर में समझदार हो। अम्मा का क्या, जसे समझा दो, समझ लेती है। बलकिशन बेवकूफ है और बेवकूफ आदमी अक्सर मुसीबत बन जाता है। मैं जनता हूँ, तुम उसे काबू में ले सकती हो। वैसे, बात कुछ भी नहीं, अपने हिस्से की जमीन का सवाल है, उसे आनाकानी क्यों होगी? बात वही है न, गँवार हाल जोतता है पराई जमीन में, और सोचता है कि वह उसी की है। दूसरे की जोत से अधिक प्रेम करने लगता है किसान। बालू किसानों से तो अलग नहीं।"[2] इस सुमेर की मनसा पर शिलों पानी फेर देती है और सुमेर से कहती है मैं तुम्हारी पत्नी हूँ, मुझे तुम्हारे हिस्से की संपत्ति चाहिए। शिलों को पता था वे सुमेर को दूसरे विवाह के लिए कानून का सहारा ले सकती है। सुमेर अपनी नौकरी के वजह से खामोश रह जाता है। इस तरह एक ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी स्त्री जो अशिक्षित है उसे कानूनी नियमों का ज्ञान है। सुमेर एक थानेदार होते हुए भी उसने कानून के नियमों को उल्लंगन किया। शिलों अशिक्षित होकर भी कानूनी तरीके से अपने अधिकार को बचाए रखा। इसी नारी के परिवर्तन रूप को लेखिका समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। आज नारी सामाजिक, आर्थिक,कानूनी विषयों से अवगत है। जिससे नारी शोषित होने से बच सकती है। आजकल सुमेर जैसे कई लोग समाज में स्थित है जो स्त्री को धोका दे रहे है। पर शीलों जैसी स्त्री सुमेर जैसे व्यक्ति को मात देती। शीलों न सुमेर से कानूनी रूप से अलग होन चाहती थी। न बलकिशन से विवाह करना चाहती है। वे अपने साथ हुए अन्याय का प्रतिकार उनके संपत्ति पर कब्जा जमाकर लेना चाहती थी। बालकिशन परेशान होकर शिलों से कहता है – "छली औरत, तुजसे यही उम्मीद कर रहा था? यही सुनना चाहता था? तेरी गद्दारी कब सामने आती है- इसी का इंतजार था। अब क्या कसर रह गई... अम्मा कहाँ हैं? पूरी तीस साला औरत मेरे गले बाँधकर कहाँ अलोप हो गईं अम्मा? मैं बकरी के बच्चे-सा मिसियाता रहा था, यह बाघिन अपने शिकार की तरह मुझे झिंझोड़-झिंझोड़कर स्वाद चखती रही।"[3] इस तरह नारी के प्रतिकार के रूप को भी देख सकते है। अकेली एक नारी पूरे परिवार की कमान अपने हाथ में लेती है। परिवार के मर्दों को अपने उंगली पर नचा रही है। यही मैत्रेयी पुष्पा का मगसद है। वे समाज में स्त्री की सत्ता को स्थापित करना चाहती है और वे अपने उपन्यास के माध्यम से स्त्री को न्याय के सुमधुर सागर में तैलते हुए देखना चाहती है।

निष्कर्ष: इस तरह मैत्रेयी पुष्पा झूला नट उपन्यास के माध्यम से समाज में, परिवार में नारी की संघर्षशीलता को उसकी संयमिता को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। और शीलों द्वारा नारी के परिवर्तित रूप को समाज के सामने प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया है। इस पुरुष प्रधान समाज में नारी की सत्ता को कायम रखने के प्रयास में सफल हो पाई है।

स्त्री, स्त्री है कोई खिलौना नहीं,
जब जी चाहा खेला, जब जी चाहा तोड़ दिया।
स्त्री आदिशक्ति है, जीतो तो जीवन स्वर्ग,
हारो तो नरक।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. मैत्रेयी पुष्पा, झूला नट , राजकमल प्रकाशन-2012 पृ. सं- 44-45
2. मैत्रेयी पुष्पा, झूला नट , राजकमल प्रकाशन-2012 पृ. सं- पृ. सं-110
3. मैत्रेयी पुष्पा, झूला नट , राजकमल प्रकाशन-2012 पृ. सं-111